

**नरसिंघा** पुं. (देश.) तुरही की तरह टेढ़े आकार का और नल के आकार का तांबे का बड़ा बाजा जो फूँक कर बजाया जाता है, फूँकने की जगह पतली और आगे का भाग क्रमशः चौड़ा होता जाता है, यह रणक्षेत्र में प्रयोग में आता था, आजकल देहातों में विवाहोत्सव आदि में बजाते हैं।

**नरसेज** पुं. (देश.) पत्तों से रहित तिधारा नामक थूहर का पौधा।

**नरसों** अव्य. (देश.) परसों के बाद वाला या पहले वाला चौथा दिन, कल-परसों-नरसों, कहीं-कहीं अतरसों भी बोलते हैं।

**नरस्कंध** पुं. (तत्.) जन-समुदाय।

**नरहड़** पुं. (तत्.) घुटने और पाँव के बीच की लंबी हड्डी।

**नरहत्या** स्त्री. (तत्.) मनुष्य वध, नरवध।

**नरहर** स्त्री. (देश.) पिंडली के ऊपर की पैर की हड्डी।

**नरहरि** पुं. (तत्.) 1. विष्णु 2. विष्णु का नृसिंह अवतार।

**नरहरी** पुं. (तत्.) नृसिंह अवतार, दशावतार में चतुर्थ अवतार (देश.) काव्य. एक छंद जिसके प्रत्येक पद में 14+5 के हिसाब से 19 मात्राएँ और अंत में एक नगण और एक गुरु होता है।

**नरहा** पुं. (देश.) एक प्रकार का जंगली वृक्ष वि. (देश.) नाले से संबंधित या नाले वाला।

**नरहीरा** पुं. (तद्.) आठ या छह पहल का तेज किनारों वाला हीरा, यह जिसके पास हो उसका वैभव बढ़ जाता है।

**नरांग** पुं. (तत्.) 1. पुरुष की इंद्रिय 2. मुँहासा।

**नरांतक** पुं. (तत्.) रावण का एक पुत्र जो युद्ध में अंगद के हाथों मारा गया।

**नरा** पुं. (देश.) नरकट की छोटी नली जिसके ऊपर सूत लपेटा रहता है।

**नराच** पुं. (देश.) 1. तीर, बाण, शर 2. पंच चागर या नागराज नामक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अंत में एक गुरु होता है।

**नराचिका** स्त्री. (तत्.) वितान वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में नगण, रगण, लघु और गुरु होता है।

**नराज** वि. (फा.) दे. नाराज।

**नराजना** स.क्रि. (देश.) नाराज करना, अप्रसन्न करना उदा. उठी हिलोर चातह नराजी, लहरि अकास लागि मुहँ साजी -जायासी अ.क्रि. नाराज होना, अप्रसन्न होना।

**नराट** पुं. (तद्.) राजा, नृपाल, नरेंद्र।

**नराधम** वि. (तत्.) 1. मनुष्यों में अत्यंत निम्न कोटि का (मनुष्य) 2. दे. नरपिशाच।

**नराधिप** पुं. (तद्.) राजा, नरपति, नृपाल।

**नराश** पुं. (तत्.) मानवभक्षी, राक्षस।

**नरिअरी/यरी** स्त्री. (तद्.) नारियल की खोपड़ी का आधा भाग।

**नरिबाहना** अ.क्रि. (तद्.) निर्वाह करना, निभाना।

**नरिया** पुं. (हि.) एक प्रकार का मिट्टी का खपड़ा, जो मकान की छाजन पर रखने के काम आता है इसे थपुआ खपड़े की संधियों पर औंधाकार रख देते हैं जिससे उन संधियों में से पानी नीचे नहीं टपक पाता।

**नरियाना** अ.क्रि. (तद्.) 1. चिल्लाना, शोर मचाना, हल्ला करना।

**नरी** पुं. (देश.) एक प्रकार का बगुल स्त्री. (तत्.) 1. नली, बाली, छुच्छी, पुपली 2. बाँस की वह नली या फूँकनी जिससे सुनार आग सुलगाते हैं 3. स्त्री, नारी स्त्री. (फा.) 1. बकरी, बकरे का रंगा हुआ चमड़ा 2. लाल रंग का चमड़ा 3. सिझाया हुआ मुलायम चमड़ा 4. नार, के भीतर की नली जिस पर तार लपेटा रहता है 5. एक प्रकार की नरई घास जो ताल या नदी के किनारे होती है।